रासो साहित्य

➢ 'रासो' शब्द की व्युत्पत्ति

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने नरपति नाल्ह द्वारा रचित 'बीसलदेव रासो' के आधार पर 'रासो' शब्द की व्युत्पत्ति 'रसायण' शब्द से मानी है।

''बारह सौ बहोत्तरी मझारि, जेठ बदी नवमी बुधवारि।

नाल्ह रसायण आरंभह, सारदा तूठी ब्रह्मकुमारि।।''

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी– रासक ('रासक–रासअ–रासा–रासो')

गार्सा द तॉसी – राजसूय

कविराय श्यामलदास, डॉ. काशीप्रसाद जायसवाल– रहस्य

डॉ. दशरथ शर्मा – रास

पं. हरप्रसाद शास्त्री –राजयश

- निर्णायक मत – उपर्युक्त सभी मतों में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा प्रस्तुत 'रासक' संबंधी मत ही निर्णायक मत माना जाता है। डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना ने इस हेतु अब्दुल रहमान द्वारा रचित 'संदेश रासक' रचना को प्रमाण रूप में प्रस्तुत किया है।

➢ रासो साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ –

1. यह साहित्य मुख्यतः चारण कवियों द्वारा रचा गया है।
2. इन रचनाओं में चारण कवियों द्वारा अपने आश्रयदाता के शौर्य एवं ऐश्वर्य का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया गया है।
3. इन रचनाओं में उस समय के सामंती जीवन की सम्पूर्ण झलक देखने को मिलती है।
4. इनरचनाओं में ऐतिहासिकता के साथ–साथ कवियो द्वारा अपनी कल्पना का समावेश भी किया गया है।
5. इनमें युद्ध व प्रेम का वर्णन अधिक किया गया है।
6. युद्ध व प्रेम का अधिक वर्णन होने के कारण इनमें वीर व श्रृंगार रस की प्रधानता मानी जाती है।
7. इन रचनाओं में डिंगल व पिंगल शैली का प्रयाग हुआ है।
8. इनमें विविध प्रकार की भाषाओं एवं अनेक प्रकार के छन्दों का प्रयोग किया गया है।
9. इन रचनाओं मे चारण कवियों की संकुचित मानसिकता का प्रयोग देखने को मिलता है।
10. रासो साहित्य की अधिकांश रचनाएँ संदिग्ध एवं अद्र्धप्रामाणिक मानी जाती है।

हिन्दी साहित्य चैनल

➢ रासो साहित्य की प्रमुख रचनाएँ –

कवि	रचना	समय	रस	अध्याय	भाषा	काव्यरूप
दलपति विजय	खुमाण रासो	9वीं सदी	वीर		राजस्थानी	प्रबन्ध
नरपति नाल्ह	बीसलदेव रासो	1212	शृंगार	चार खण्ड		वीरगीत
जगनिक	परमाल रासो (आल्ह खण्ड)	1230	वीर			वीरगीत
चन्दवरदायी	पृथ्वीराजरासो		वीर शृंगार	69 समय सर्ग	डिंगल	प्रबन्ध
केदार भट्ट	जयचन्द्र प्रकाश	1224	वीर			प्रबन्ध
मधुकर भट्ट	जयमयंक जसचंद्रिका	1243				प्रबन्ध
शार्ङ्गधर	हम्मीर रासो					
नल्ह सिंह	विजयपाल रासो		वीर	42 छंद		वीरगीत
श्रीधर	रणमल्ल छंद	1454	वीर	70 छंद	डिंगल	वीरगीत

पृथ्वीराज रासो

- ➢ लेखक – चन्दबरदाई
- ➢ जन्मकाल – आचार्य शुक्ल के अनुसार 'चन्दबरदाई' का जन्म 1168 ई. (1225 वि.) में भट्ट जाति के 'जगात' नाम गोत्र में हुआ था। (जन्मस्थान –लाहौर)
- ➢ काव्य स्वरूप – यह प्रबन्धात्मक श्रेणी के अन्तर्गत 'महाकाव्य' श्रेणी की रचना मानी जाती है।
  नोट :– (i) आचार्य शुक्ल के अनुसार यह हिन्दी साहित्य का सर्वप्रथम महाकाव्य माना जाता है। चन्दबरदाई हिन्दी साहित्य के प्रथम महाकवि माने जाते हैं। (ii) नरोत्तम स्वामी के अनुसार वह मुक्तक रचना मानी जाती है।
- ➢ प्रधान रस (अंगी रस) – वीर रस व शृंगार रस
- ➢ प्रमुख अलंकार – अनुप्रास व यमक
- ➢ कुल पद (श्लोक) – 16306
- ➢ छन्द–विधान – इस महाकाव्य में प्रयुक्त 16306 पदों की रचना के लिए कुल 68 प्रकार के छन्दों का प्रयोग किया गया है, जिनमें 'छप्पय' छंद का अधिक प्रयोग किया गया है इसलिए 'छप्पय' छंद चन्दबरइाई का सर्वप्रिय छंद माना जाता है।

इसके अलावा इसमें दूहा, तोमर, श्रोटक, गाहा एवं आर्या छंदों का प्रयोग भी हुआ है।

- ➢ काव्य–विभाजन – इस महाकाव्य को कुल 69 समयों में विभाजित किया गया है।
- ➢ भाषा – राजस्थानी व ब्रज भाषा का सम्मिलित प्रयोग।
- ➢ शैली – इसमें ब्रज भाषा का अधिक प्रयोग हुआ है, अतः इसमें पिंगल शैली का प्रयोग हुआ माना जाता है।
- ➢ नायक – अजमेर के चौहान राजा अर्णोराज के पात्र एवं सोमेश्वर के पुत्र पृथ्वीराज चौहान।

  नायक की श्रेणी – धीरोदत्त नायक

- ➢ नायिका – कन्नौज के राजा जयचंद की पुत्री 'संयोगिता'।

  नायिका की श्रेणी – मुग्धा नायिका

- ➢ विशेष तथ्य –

हिन्दी साहित्य चैनल

1. इस ग्रंथ की सर्वप्रथम जानकारी कर्नल टॉड ने अपने ग्रंथ 'एनाल्स एण्ड एण्टिक्विटीज ऑव् राजस्थानी (1839ई)' में प्रदान की थी। उन्होंने इसके एक भाग को 'संगोपता नेम' के नाम से प्रकाशित कराया था।

2. इस रचना के कुछ पद 'पुरातन प्रबंध संग्रह' में प्राप्त होते हैं, जिससे इस ग्रंथ की प्राचीनता प्रमाणित होती है।

3. 'कयमासवध' प्रसंग इसी ग्रंथ में प्राप्त होता है।

4. आचार्य शुक्ल, डॉ. नगेन्द्र, श्री हरप्रसाद शास्त्री आदि इतिहासकरों के अनुसार इस ग्रंथ का उत्तरार्द्ध भाग चन्दबरदाई के पुत्र 'जल्हण' द्वारा पूर्ण किया गया था। इस संबंध में यह उक्ति प्रसिद्ध हैं :–

''पुस्तक जल्हण हत्थ दै, सचलि गज्जन नृप काज।''

5. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने इस रचना को 'शुक–शुकी संवाद' कहकर पुकारा है।

6. डॉ. वूल्लर ने सर्वप्रथम कश्मीरी कवि जयानक कृत 'पृथ्वीराजविजय' के आधार पर सन् 1875 ई. में 'पृथ्वीराज रासो' को अप्रामाणिक अघोषित किया।

7. डॉ. बच्चन सिंह ने लिखा है, ''यह (पृथ्वीराज रासो) एक राजनीतिक महाकाव्य है, दूसरे शब्दों में राजनीति की महाकाव्यात्मक त्रासदी है।''

8. 'कयमास बध' ' पृथ्वीराज रासो' का एक महत्वपूर्ण समय है।

9. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है, ''चन्दबरदाई हिन्दी के प्रथम महाकवि माने जाते हैं और इनका 'पृथ्वीराज रासो' हिन्दी का प्रथम महाकाव्य है।

10. मिश्र बन्धुओं ने लिखा है, ''हिन्दी का वास्तविक प्रथम महाकवि चन्द्रबरदाई को ही कहा जा सकता है।''

11 **महत्वपूर्ण पंक्तियाँ –**

. राजनीति पाइयै। ग्यान पाइयै सु जानिय।।

उकति जुगति पाइयै। अरथ घटि बढ़ि उनमानिया।।''– पृथ्वीराज रासो से

''उक्ति धर्म विशालस्य। राजनीति नवरसं।।

खट भाषा पुराणं च। कुरानं कथितं मया।।''– चंदबरदाई

''मनहु कला ससभान कला सोलह सो बन्निय''– पृथ्वीराज रासो से

''बज्जिय घोर निसान रान चौहान चहौं दिस।'' – पृथ्वीराज रासो से

'रघुनाथचरित हनुमन्त कृत, भूप भोज उद्धरिय जिमि।

प्रथिराज सुजस कवि चंद कृत, चंद नंद उद्धरिय तिमि।।'' – पृथ्वीराज रासो से

12. 'पृथ्वीराज रासो' में पृथ्वीराज चौहान और जयचंद के युद्ध का वर्णन मिलता है – 'कन–उज्ज–समय' में

13. डॉ. नगेन्द्र ने इस रचना को 'घटनाकोश' कहकर पुकारा है।

14. पृथ्वीराजरासो रचना की हस्तलिखित प्रतियों के चार संस्करण प्राप्त होते हैं :–

नोट :– डॉ. दशरथ शर्मा ने चौथे संस्करण को मूल रासो काव्य माना है।

हिन्दी साहित्य चैनल

15. ''एक थाल जनम, एक थाल मरण'' यह कथन चन्दबरदाई व पृथ्वीराज चौहान के बारे में प्रसिद्ध है। ऐसा माना जाता है कि इन दोनों अभिन्न मित्रों का जन्म एक ही दिन हुआ था एवं इनकी मृत्यु भी एक ही दिन हुई थी।

16. कर्नल टॉड ने इस रचना को ऐतिहासिक ग्रंथ माना है।

17. चंदबरदाई दिल्ली के अन्तिम हिन्दू सम्राट् पृथ्वीराज चौहान के सामंत व प्रसिद्ध राज कवि थे।

18. बाबू गुलाबराय ने इस रचना को 'स्वाभाविक विकासशील' कहकर पुकारा है।

19. बाबू श्यामसुंदरदास व उदयनारायण तिवारी इसे 'विशाल वीर काव्य' मानते हैं।

20. चंदबरदाई छप्पय छंद के विशेषज्ञ माने जाते है।

इस रचना की प्रामाणिकता के संबंध में निम्न तीन मत प्रचलित हैं :–

1. अप्रामाणिक 2. अर्द्धप्रामाणिक 3. प्रामाणिक

➢ अप्रामाणिक मानने वाले इतिहासकार –

1. श्यामलदान
2. कविराज मुरारीदान
3. मुंशी देवीप्रसाद
4. शुक्ल
5. रायबहादुर पं. गौरीशंकर हीरानंद ओझा
6. मोतीलाल मेनारिया
7. डॉ.वूल्लर

ट्रिक :– श्यामल मुरारी ने देवी की शक्ल पर हीरे मोती और गुलर के फूल चढ़ाएं जो अप्रामाणिक थे।

नोट :– (i) इस ग्रंथ को अप्रामाणिक मानने वाले सर्वप्रथम विद्वान डॉ. बूलर माने जाते है। इन्होंने 1875 ई. में इसे अप्रामाणिक घोषित किया था। (ii) आचार्य शुक्ल के अनुसार यह पूरा ग्रंथ जाली माना गया है।

➢ अर्द्धप्रामाणिक मानने वाले इतिहासकार –

1. डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी
2. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
3. मुनिजिनि विजय
4. अगरचन्द नाहटा

ट्रिक :– सुनीता हजार जिनि अगरबत्ती आधी जला

➢ प्रामाणिक मानने वाले इतिहासकार –

1. डॉ. श्यामसुन्दर दास
2. मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या
3. मिश्रबन्धु
4. डॉ. दशरथ शर्मा
5. नगेन्द्र
6. कर्नल टॉड

हिन्दी साहित्य चैनल

7. ग्रियर्सन

ट्रिक :– **श्यामसुन्दर ने विष्णु के मिश्रित प्रामाणिक दस नग कर्नल टॉड के आगे गिरा दिए।**

2. बीसलदेव रासो

- लेखक – नरपति नाल्ह
- रचनाकाल – 1155 ई. (1212 वि.)

नोट :– 1. इस रचनाकाल को मानने के पीछे निम्न उद्धरण प्रस्तुत किया जाता है –

''बारह सौ बहोत्तरा मझारि, जैठ बदी नवमी बुधवारि।

नाल्ह रसायण आरंभह, सारठा तूठी ब्रह्मकुमारी।।''

कुछ इतिहासकार यहाँ 'बारह सौ बहोत्तर' का अर्थ वि.सं. 1272 भी मानते हैं, परन्तु ज्यादातर वि.सं. 1212 ही स्वीकार करते है।

2. डॉ. मोतीलाल मेनारिया इसका रचनाकाल 16 वीं शताब्दी मानते हैं एवं वे 'नरपति' नामक किसी गुजराती कवि को इसका रचयिता मानते हैं।

3. डॉ. माता प्रसाद गुप्त इसका रचनाकाल 14 वीं शताब्दी मानते है।

4. नवीन शोधों में प्राप्त इसकी एक प्राचीन प्रति के अनुसार इसका रचनाकाल 1016 ई. (1073 वि.) सिद्ध हुआ है।

इस प्राचीन प्रति में निम्न पंक्ति प्राप्त होती है –

''संवत् सहस तिहत्तर जानि, नाल्ह कबीसर सरसीय् वाणि।''

5. रायबहादुर पंडित गौरीशंकर हीरानंद ओझा ने इसे हम्मीर के समय की रचना कहा है।

- प्रधान (अंगी) रस – शृंगार (वियोग व संयोग शृंगार का मर्मस्पर्शी चित्रण)
- काव्य स्वरूप – मुक्तक काव्य
- कुल छंद – 128

नोट :– डॉ. माता प्रसाद गुप्त ने इसकी 128 छंदों की एक प्रति का संपादन किया है। यही इसका मूल रूप माना जाता है।

- नायक – अजमेर का चौहान राजा बीसलदेव तृतीय (विग्रहराज चतुर्थ)
- नायिका – मालवा के भोज परमार की पुत्री राजमती।
- काव्य विभाजन – इस रचना का विभाजन चार खण्डों में किया गया है, जिसका संक्षिप्त कथासार निम्नानुसार है :–

हिन्दी साहित्य चैनल

1. प्रथम खण्ड – अजमेर के राजा विग्रहराज चतुर्थ (बीसलदेव तृतीय) एवं मालवा के भोज परमार की पुत्री राजमती के विवाह का वर्णन।

2. द्वितीय खण्ड – रानी के किसी व्यंग्य से रूष्ट होकर राजा बीसलदेव का उड़ीसा चले जाना एवं 01 वर्ष (12 महीने) तक वहीं प्रवास करने का निर्णय।

3. तृतीय खण्ड – रानी राजमती के विरह का वर्णन एवं बीसलदेव के उड़ीसा से लौटने का वर्णन।

4. चतुर्थ खण्ड – राजा भोज परमार के द्वारा अपनी पुत्री को अपने घर लिवा ले जाना तथा बीसलदेव का वहाँ जाकर राजमती को फिर से चित्तौड़ ले आने का वर्णन।

➢ विशेष तथ्य –

1. राजा बीसलदेव ने वीर चरित्र का वर्णन इनके राजकवि 'सोमदेव' के द्वारा स्वरचित संस्कृत नाटक ''ललित विग्रहराज'' में भी किया गया है। इस नाटक का कुछ अंश बड़ी–बड़ी शिलाओं पर खुदा हुआ मिलता है और यह राजपूताना म्यूजियम में सुरक्षित है।

2. यह मात्र 100 पृष्ठों का एक लघु ग्रंथ है।

3. आचार्य शुक्ल ने वीर काव्य का प्रथम ग्रंथ बीसलदेव रासो को स्वीकार किया है।

4. यह काव्य ग्रंथ नहीं है, इसे केवल गाने के लिए रचा गया था।

5. इसमें साहित्यिक भाषा का प्रयोग नहीं होकर राजस्थानी, ब्रज एवं मध्यप्रदेश की भाषा का प्रयोग हुआ है।

6. इसकी रचना शैली पिंगल मानी जाती है।

7. यह श्रृंगार प्रधान रचना मानी जाती है।

8. हिन्दी में 'बारहमासा' का सर्वप्रथम वर्णन इसी ग्रंथ से माना जाता है।

9. 'बीसलदेव रासो' की नायिका का नाम – राजमती (भोज परमार की पुत्री)

हिन्दी साहित्य चैनल